प्रबन्धकारिणी कमेटी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

अध्यक्ष : **जस्टिस नगेन्द्रकुमार जैन**
पूर्व मुख्य न्यायाधीपति, मद्रास-कर्नाटक उच्च न्यायालय
पूर्व अध्यक्ष - मानवाधिकार/लोकायुक्त, हिमाचल प्रदेश
व पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान मानवाधिकार आयोग

उपाध्यक्ष : **श्री राजकुमार काला**, सीनियर एडवोकेट
श्री नरेन्द्रकुमार पाटनी, आई.पी.एस. (सेवानिवृत्त)

मानद मंत्री : **श्री प्रकाशचन्द्र जैन**, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)

संयुक्त मंत्री : **श्री पूनमचन्द्र शाह**, एडवोकेट
डॉ. हुकमचन्द सेठी, वरिष्ठ सर्जन,
अधीक्षक, भगवान महावीर कैन्सर हॉस्पिटल

कोषाध्यक्ष : **श्री महेन्द्रकुमार पाटनी**, पूर्व उपनिदेशक उद्योग विभाग

सदस्य : **श्री सुभद्रकुमार पाटनी, श्री तेजकरण डंडिया, श्री भंवरलाल अजमेरा, श्री पदमचन्द तोतूका, श्री नरेशकुमार सेठी, श्री आर. के. जैन, श्री बलभद्रकुमार जैन, श्री नवीनकुमार बज, श्री नानगराम जैन, जस्टिस मिलापचन्द जैन, डॉ. कमलचन्द सोगाणी, श्री हेमन्तकुमार सोगानी, श्री अशोक जैन, श्री शान्तिकुमार जैन, जस्टिस नरेन्द्रमोहन कासलीवाल, श्री कमलकुमार बड़जात्या, जस्टिस नरेन्द्रकुमार जैन, श्री देवेन्द्रकुमार जैन, श्री अशोक पाटनी, श्री सुधांशु कासलीवाल, श्री सुभाषचन्द जैन।**

Website : www mahaveerji.org (Online Booking)
www.shrimahaveerji.com

आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज के ५०वें दीक्षा वर्ष (ज्ञानवर्द्धनोत्सव-वर्ष) के उपलक्ष्य में महावीर वाणी के ५० मोती श्री महावीरजी तीर्थयात्रियों को समर्पित

जैनविद्या संस्थान/अपभ्रंश साहित्य अकादमी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
राजस्थान

Website : www jvs.jainapa.com
www apa.jainapa.com

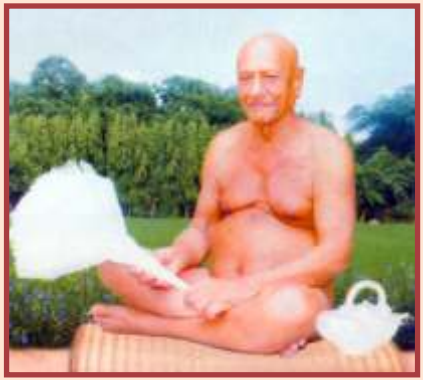

श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज

अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में भगवान महावीर स्वामी की
प्रतिमा के दर्शन करते हुए पूज्य आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज

आचार्यश्री के अनुसार सर्वोदयी जैनधर्म के चार स्तम्भ हैं :

१. आचार में अहिंसा, २. विचार में अनेकान्तवाद, ३. वाणी में स्याद्वाद और ४. समाज में अपरिग्रह। आचार्यश्री इन चार स्तम्भों के महत्त्व का विवेचन करते हैं।

आचार्यश्री कहते हैं – ''यदि हमें अपनी संस्कृति और धर्म को बचाना है तो विद्वानों की न केवल कमी दूर करनी होगी, उन्हें पर्याप्त संरक्षण भी देना होगा। समाज की यह जिम्मेदारी है कि वह विद्वानों की रक्षा करे।''

आचार्य श्री देशभूषणजी महाराज ने आचार्य श्री विद्यानन्दजी को जो पत्र लिखा उसके अंश – ''अपने धर्म में विभिन्न सम्प्रदाय हैं, जहाँ जैसा स्थान हो वहाँ की धार्मिक परम्पराओं, मान्यताओं और भावनाओं को ध्यान में रखकर कार्य करना, जहाँ जिस प्रकार की पूजा-अर्चना-आराधना और अनुष्ठान होते हों उसी प्रकार से करवाना, ताकि समाज में द्वंद्व न हो। हमें समाज को सबल बनाना है और समाज ही हमारी शक्ति है।''

जैनविद्या संस्थान, जयपुर में पत्राचार के माध्यम से जैनधर्म-दर्शन के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है।

सम्पर्क-सूत्र : 0141-2385247

जस्टिस नगेन्द्र कुमार जैन	पूनम चन्द्र शाह	डॉ. कमलचन्द सोगाणी
अध्यक्ष	संयुक्त मंत्री	निदेशक

19 सितम्बर 2012 दशलक्षण पर्व